International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly

ISSN – 2347-7075
Impact Factor – 4.082
Vol.4 No.2 Nov– Dec 2016

हिंदी कविता में आम्बेडकरी विचार

प्रा. व्हि. पी. नंदगिरीकर
हिंदी विभागाध्यक्ष,
बॅ. खर्डेकर महाविद्यालय, वेंगुर्ला (महाराष्ट्र)

डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर का सम्पूर्ण जीवन ही मानवजाती के लिए पथप्रदर्शक रहा है। आज सम्पूर्ण विश्व ने उनके आचार एवं विचारों को माना है । कहना न होगा की डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर मानवतावाद का दूसरा नाम है । अखिल मानव के संदर्भ मे सोचने, समझने एवं अधिकारों के प्रति सचेत करनेवाला यह महामानव था । गौतम बुध्द, महात्मा कबीर, महात्मा फूले, लोकराजा राजर्षी षाहू महाराज कें विचारों की अंतिम कडी के रुप मे डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर जी को जाना जाता है। विधिवेत्ता, न्यायषास्त्री, अर्थषास्त्री, समाजषास्त्री, दलित राजनीतिक नेता तथा विष्व के विषाल लोकतंत्र के संविधान करता के रुपमें डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर की पहचान है । अपने विचारो से पद–दलित समाज में नवचेतना निर्मान की, स्त्रियों को मुलभूत अधिकार प्राप्त करवाकर देने के लिये त्यागपत्र दिया, राजनेता, भारतीय संविधान में समता, स्वतंत्र, बंधुत्व आदि मानवीय मूल्यों को स्थापना की, अपने विषाल व्यक्तित्व के द्वारा अर्थषास्त्र, जल, आदि विषयों में अपने पहचान बनानेवाले डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर है।

डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर के विचारों का गहरा प्रभाव हिंदी काव्यपर दिखाई देता है। हिंदी काव्यधाराने अपनी अलग पहचान बनाई है। आम्बेडकरी विचारधारा का काव्य कई नामों से जाना जाता है " 'समानांतर साहित्य', 'विद्रोही साहित्य', 'क्रांतिकारी साहीत्य', 'आम्बेडकरवादी साहीत्य' आदी नाम दिये गये है। डॉ. आम्बेडकर दलित साहीत्य के जनक तथा प्राणतत्व है। दलित साहीत्य की सम्पूर्ण प्रतिबध्दता डॉ. आम्बेडकर के साथ है। यह साहीत्य भारत के करोडो लोगो का प्रतिनिधित्व करता है। जो सदियों से गुमनाम गुलाम है।" डॉ. बाबासाहेब के विचारो के कारण सामाजिक परिवर्तन हुआ । दलित समाज को पूर्णतः परिवर्तीत करने का काम बाबासाहब के विचारों में दिखाया देता है "बुध्द दर्षन का

प्रसार, आम्बेडकरी विचारों का प्रसार, मानवता, प्रज्ञा, करुणा,षील,दलित अस्मिता, दलित जीवन, स्त्री मुक्ती का संघर्ष,समता,जीने की प्रेरना, संघर्ष, विद्रोह, संविधान सुरक्षा, दलितत्व, को वर्ग–वर्ण हिनसमाज का निर्मान का नकार, दलितमुक्ति, जातीयता का विरोध, सामाजिक समस्याओं का चित्रण आदि कई सारी विषेषताएँ आम्बेडकरी विचारों मे दिखाई देती है।

'**अब तो जागें**' यह कविता संग्रह सोहन लाला '**सुबुध्द**'जी का डॉ. बाबासाहेब के विचारों एव कार्यो के लिए समर्पित है। अपने काव्य का आधार ही डॉ बाबासाहेब के सम्पूर्ण कार्य एव विचारों को माना है। **भारतीय संविधान निर्माता/समत्व, धर्म के पर्याय,/क्रातिपुंज, विष्वरत्न,/बोधिसत्व, बाबासाहेब/डॉ. भीमराव आंम्बेडकर, /जीनके आजीवन संघर्ष से,"**[2] कवि सोहनलाल जी ने अलग अलग विषयों को लेकर आम्बेडकरी विचारों का प्रतिपादन किया है। समाज में उत्पन्न विभिन्न समस्याओं का चित्रण इस काव्य संग्रह में हुआ है। इस संदर्भ में **माता प्रसाद** कहते है **"**कवि सोहनलाल 'सुबुध्द' की काव्यकृती 'अब तो जागो' मे संग्रहीत कविताओं में जहॉ दलितों–षोषितों की गोहार है, वही उनकी प्रतिरोध की ललकार भी है। इनमें जहॉ पूर्वजन्म, उॅच – नीच का विरोध है, वही उसे काटने की तलवार भी हे। जहॉ सेवा करना ही दलितों के जीवन का सार है, वही अब दलितों की आवाज में इसका इनकार भी हैं ।"[03]

दलितो एवं षेषितों को अपनी प्रगति एवं विकास की गति को अबाद रखना है तो डॉ. बाबासाहेब के बदतलाएं मार्ग को अपनाना होगा। **मनुष्य का कर्म ही सबसे बडा धर्म है**। धर्म मार्तंड, धर्म की आड लेकर सामान्य लोंगो को फसाने का काम करता है, अपके जन्म को पूर्वजन्म का फल कह कर षोषण करते है। निचली जाति में आपका जन्म इस कारण हुआ है की पूर्व जन्म का पाप है। कवि कहता है यह विषमता, भेदभाव, सवर्णो के द्वारा निर्मान की गई है। आप प्रस्थापित समाज व्यवस्था के विरुध आवाज उठा न पाये, इसलिए पूर्वजन्म का पाप या कर्म फल मानकर आपनी ही जाति में रहने के लिए आपके बाध्य किया जाता है।**"जिससे समाज में/परिवर्तन न आने पाये/ संचेतना न जागने पाये/षोषित/ षोषण के विरुध्द / आवाज न उठा पाये"**[4]

साम्प्रदायिकता एवं जातिव्यवस्था के कारण समाज का बहुत बडा नुकसान हुआ है। जिन लोगों की वाणी मे सच्चाई होती है, वे किसीसे भी नही डरते, क्योंकि उनकी बात सत्यपर आधारीत होती है। जो व्यक्ती अपने जीवन में सत्य का अवलंब करता है वो

अडम्बर,दिखावा, ढोंग अदि से डरते नहीं । सत्यता के लिए भलेही समय लगे पर असत्य की कभी जीत नही होती । भारतीय समाज धर्माध है, धर्म के द्वारा थेपि गई गलत रुढि, परम्पराओं को मानता है। कवि **"वाणी की सचचाई"** कविता के द्वारा धर्म, जाति, सम्प्रदायों में निर्माण की दूरियों को मिटाने का काम करता है। डॉ बाबासाहेब कहते है कि मैं उस धर्म को पसंत करता हूं जो स्वंतत्रता, समानता और भाईचारे के का भाव सिखाता है ।

"यह वाणी की / सच्चाई ही है /xxx/ अम्बेडकर की / वाणी में / दमन के विरुध्द / संघर्ष करना / सिखाती है " [5]

कवि ने वर्ण व्यवस्था एवं जाती व्यवस्था का भी विरोध किया है। जाती व्यवस्था मानव समाज को लगा हुआ बहुत बडा कलंक है। जाती व्यवस्था **"ये वर्ण! ये जातिया !"** कविता के द्वारा कविने जाति व्यवस्था एवं वर्ण व्यवस्था का विरोध किया । मानव धर्म की प्रतिष्ठा की है। मनुष्य का जीवन नैतिकतापूर्ण होना चाहीए, अपने नैतिक मूल्यो के कारण व्यक्ती की सामाजीक गरिमा बढ जाती है। उच्चनैतिक मूल्य लोगों के सम्मुख है तो निष्चित रुप से देष, समाज एवं व्यक्ती का, मानव जाती का विकास सम्भव हो सकता है। जिस समाज में नीति एवं मूल्य उॅचे दर्जे के है तो वो निष्चित रुप से मानवता की स्थापना कर सकता है। परंतु भारतीय समाज व्यवस्था में तो वर्ण व्यवस्था का प्रबलता है, जिस के कारण नैतिक अधपत हुआ। कवि **"अनैतिक तुम मरो।"** कविता के द्वारा कहते है "**यह अनैतिकता ही है। जो दलितों का / निर्बलों का /षोषन कराती /उन्हे जिंदा जलवाती/सामुहीक बलात्कार करवाती।"**[6]**डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर** जी कहते है कि – **"मैं उस धर्म को पसंद करता हूँ जो स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे का भाव सिखाता है।" "क्यों विष्वास करूँ"** कविता के द्वारा झूठे धर्म की धज्जिया उडाते है। तुम्हारी नैतिकता में भी अनैतिकता दिखाई देते है। धर्म के विक्रम रूप का चित्रण करते हुए कवि कहता है – **"तुम्हारी नैतिकता की छतरी में/छेद ही छेद हैं – अनाचारों के/और पैनार हुए हैं/धर्म की आड़ में हिंसा के नाखून।/"**[7]

डॉ. बाबासाहब मानते है कि षिक्षा ही समाज में परिवर्तन ला सकती है, समानता निर्माण कर सकती है। जब मनुष्य षिक्षित हो जाता है, तब उसमें विवेक और सोचने की षक्ति पैदा हो जाती है। इसी बात को कवि ने **"चुप्पी तोडो"** कविता के माध्यमसे व्यक्त किया हैं। सदियों से चूप रहने की आदत पडी है, अपने उपर होनेवाले अन्याय–अत्याचार

को सहने की आदत पडी है, इस अन्याय–अत्याचार का विरोध किया जाना चाहिए। अपने डर को निकाल दो, डॉ. बाबासाहब के बताये मार्ग का अनुसरन करते हुए सामाजिक गुलामी से मुक्त हो जाओ, शिक्षा का अवलंब करो। – **"कोई विक्षिप्त न कह दे/का डर छोडो! चुप्पी तोडो!/××××/अपनी बात डंके की चोट पर अपने अधिकारार्थ/न्यायार्थ ही नहीं/ सम्मानार्थ भी।"**[8] इसी प्रकार का भाव **"झाडू और कलम"** कविता के द्वारा देखा जा सकता है, बदलते सामाजिक परिवेष का चित्रण कवि करता हुआ कहता है कि अब मेरे हाथ से झाडू निकल चूका है, उसकी जगह कलम आयी है, यह सब डॉ. बाबासाहब के देन है, मैं अपनी कलम की ताकत से सामाजिक गंदगी को साफ करूँगा – **"कल मेरे हाथ में झाडू था/आज कलम/××××/तुम्हारे भीतर की बेषर्म संस्कृति /के बीच पली/ बढी पली/बढी/ब्राहम्णी कम्प्युटराईज्ड मेमोरी को/ध्वस्त करना होगा।/××××/तुम श्रेष्ठ ब्राहम्ण हम पतिन षूद्र/ इस भूम से जल्द मुक्ति मिलेगी?"**[9]

नरी जीवन की दैन्य पूर्ण सामाजिक स्थितियों का चित्रण कवियों नें किया है । आये दिन होनेवाली नारी जीवन की दुर्भाग्य पूर्ण घटनाओं के कारण हम अपने आप को मानव कहने के योग्य नहीं है। **"समय रो पडता है/ भ्रष्टाचार का/उफनाता महासागर देखकर/ समय रो पडता है/जब उसकी बेटियों के/वक्षःस्थल/नोचते है/लज्जाहीन/कामातुर/दुष्ट हाथ/"**[10] (अब तो जागे–सोहनलाल 'सुबुध्द') इसी प्रकार से **"मैला ढोने वाली''** कविता के माध्यमसे सुरेष पंजम सामाजिक बुराई का चित्रण करते है। मानविय ''मैला ढोने वाली '' स्त्री की दैन्य अवस्था का चित्रण कवि अपनी कविता के द्वारा करता है। – **'हार गई मैं' कह रही बानों/यह डंडा अब इस निरीह भैंसे पर नहीं/उन सफेद भैंसों पर चलेगा/जिसने छिन लिया है मेरे मूँह की रोटी।।"**[11]

कवि को लोकतत्रिक मूल्यों एवं व्यवस्था में अटूट विश्वास रहा है। डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर जी ने लोकतत्रिक मूल्यो को महत्वपूर्ण माना। कवि ''**रे मतदाता''** कविता के द्वारा कहता है कि देष को अच्छी सरकार देने के लिए अपने मतदान का प्रयोग करना,उचित बटन दबाकर लोकतंत्रके लाज को बनाएँ रखना, तुम्हारा विकास लोकतंत्रके द्वारा ही संभव हो सकता, किसी के बहेकावे मत आना – **"रे मतदाता!/तु है भारत का निर्माता/××××/वाग्जाल में न फँस/सोच–समझकर/प्रयोग करो/अपना मताधिकार/"**[12] कवि लक्ष्मी नारायण सुधाकर को भी लोकतांत्रिक मूल्यों मे अटूट विष्वास है

कवि **"लोकतंत्र की धारा"** कविता के द्वारा भारतीय लोक तंत्र की गौरव–गाण करता है, जिसने स्वतंत्रता, समता, बंधुत्व आदि महत्वपूर्ण मूल्यों को संजोयों है। – **"सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न लोकतंत्री गणराज्य हमारा।/××××/लोकतंत्र में मील के पत्थर तीन तत्व संचारी/स्वतंत्रता–समता एवं मातृत्व–भावना भारी।।××××/वेगवती होगी भारत में लोकतंत्र की धारा।"**[13]

अतः कहा जा सकता है कि डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर के सम्पूर्ण विचारों का गहरा प्रभाव हिंदी दलित काव्य पर देखने को मिल जाता है। हिंदी कवियों ने डॉ. बाबासाहब जी के विचारों का अनुसरण करते हूए अपने काव्य का सूजन किया, उनके विचार एवं सिध्दांतों का प्रतिपादन किया है। डॉ. बाबासाहब का व्यक्तित्व ही विषाल रहा है डॉ. बाबासाहब के मानवतावादी विचारों के कारण सामान्य–से–सामान्य व्यक्ति का चित्रण कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यमसे किया है। **गौतमबुध्द, महात्मा कबीर, महात्मा फूले, लोकराजा राजर्षी षाहू महाराज** आदि के विचारों का गहरा प्रभाव डॉ. बाबासाहब पर होने के कारण **हिंदी काव्य में समता, स्वातंत्र्य, बंधुत्व** आदि **मानविय जीवन मूल्यों** का चित्रण होने लगा। डॉ. बाबासाहब ने जान लिया था की इस देष का सबसे अधिक नूकसान जातियता एवं साम्प्रदायिक भावना के कारण हुआ है, हिन्दु धर्म को संकीर्ण बनाने का काम जातियताने किया है, अतः इस **जातियता** एवं **साम्प्रदायिकता** के भाव को मिटाने का काम कवियों ने अपनी कविताओं के द्वारा किया है। डॉ. बाबासाहब के विचार व्यापक होने के कारण **मजदूर वर्ग** की समस्याओं का चित्रण अपनी कविताओं के द्वारा किया है। भारतीय समाज व्यवस्था में सब से बडी समस्या स्त्री जीवन की रही है, भारतीय समाज व्यवस्था ने **नारी (स्त्री) को दैन्यपूर्ण अवस्था** की है, इन सब में दलितों में दलित स्त्री दलित रही है। उसका चित्रण भी कवियोंने किया है। इस देष का धर्म ने सब से अधिक नूकसान किया है। भारतीय धर्म व्यवस्था धर्ममार्तोंडे के कारण सामान्य जनता का षोषण किया गया था। अतः इसके विरूध बाबासाहब ने आवाज बुलंद की है। डॉ. बाबासाहब जानते थे की दलित एवं स्त्री का दर्जा उँचा उठाना है तो उसके लिए षिक्षा आवष्यक है। बिना षिक्षा के इन दोनों वर्गो का विकास सम्भव नहीं है अतः कवियोंने स्त्री एवं षिक्षा, दलित एवं षिक्षा से संबंधी अपने विचार व्यक्त किए है। डॉ. बाबासाहब को लोकतांत्रिक व्यवस्था मे पूर्ण विष्वास था। इसी का परिणाम है कि भारतीय लोकतंत्र के सविधान का निर्माण का विषाल

कार्य को निभाया। वे जानते थे की लोगों के मतदान के द्वारा सम्भव है कि सम्पूण परिवर्तन, इन्हीं विचारों का प्रतिपाद हिंदी कवियों अपनी कविताओं के द्वारा की है।

संदर्भसूचि :

01) इक्कींसवीं सदी का दलित साहीत्य – डॉ. भरत सगरे प्र.क्र. 63

02) अब तो जागें – सोहन लाल 'सुबुध्द' प्र.क 04

03) वही प्र.क्र. 08 / 04)वहीप्र.क्र. 25 / 05) वही प्रष्ठ. प्र.क्र. 27 / 06) वही प्रष्ठ. क्र. 29

07) क्यों विश्वास करूँ – सूरजपाल चौहान प्र. 26

08) अब तो जागें – सोहनलाल सुबुध्द प्र. 47

09) आग और आंदोलन – मोहनदास नैमिषराय प्र. 58

10) अब तो जागे – सोहनलाल 'सुबुध्द'

11) भीख नहीं अधिकार चाहिए – सुरेश पत्र्जम प्र. 17

12) अब तो जागे– सोहनलाल – सोहनलाल 'सुबुध्द' प्र. 59

13) वामन फिर आ रहा है – लक्ष्मी नारायण सुधाकर प्र. 33